<u>संस्कृति</u>

<u>निबंध का सार</u>

मनुष्य संस्कृति तथा सभ्यता से जुड़ा हुआ है। हमने कभी यह जानने का प्रयास नहीं किया है कि संस्कृति और सभ्यता कहते किसे हैं। यह पाठ हमें बहुत से उदाहरणों के माध्यम से इन्हीं प्रश्नों के उत्तर देता है। इसमें बताया गया है कि संस्कृति ही सभ्यता के जन्म का कारण है। संस्कृति को टुकड़ों में बाँटा नहीं जा सकता है। जो लोग इसे बाँटने का प्रयास करते हैं, वे इसके कल्याणकारी स्वरूप को नष्ट कर रहे हैं।

<u>संस्कृति की परिभाषा</u>

संस्कृति वह कहलाती है, जब मानव के अंदर किसी विषय को लेकर चिंतन-मनन करने की आवश्यकता पड़ती है। वह उस विषय में गहराई से सोचता है और फिर उसको साक्षात रूप देने के लिए प्रयासरत रहता है। इससे वह महत्वपूर्ण खोजें करता है। उसके द्वारा कलात्मक चीज़ों के सृजन के लिए किए गए प्रयास भी संस्कृति ही हैं। जैसे- साहित्य, चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पकला इत्यादि भी संस्कृति का ही हिस्सा हैं।

<u>सभ्यता की परिभाषा</u>

सभ्यता एक सामाजिक व्यवस्था है, जोकि हमारे जीवन को आसान व सुखी बना देता है। मनुष्य के जीवन में रहन-सहन के लिए एकत्र साधन व उपकरण आदि सभी सभ्यता के अंदर आते हैं।

<u>पाठ का उद्देश्य</u>

- संस्कृति के अर्थ को स्पष्ट करना।
- सभ्यता के अर्थ को स्पष्ट करना।
- संस्कृति तथा सभ्यता में जो अंतर है, उसे दर्शाना।
- संस्कृति तथा असंस्कृति में जो अंतर विद्यमान है, उसे दर्शाना।
- सभ्यता तथा असभ्यता में जो अंतर विद्यमान है, उसे दर्शाना।

<u>पाठ से मिलने वाला संदेश / शिक्षाएँ / प्रेरणा</u>

- भारतीय संस्कृति की महानता का बोध करवाना।
- संस्कृति का बंटवारा करने से रोकने की शिक्षा देना।
- लोगों को संस्कृति तथा सभ्यता को समझने की प्रेरणा देना।

ISC COACHING CENTRE